आर्योदय
ARYODAYE

Aryodaye Weekly No. 291 ARYA SABHA MAURITIUS 12th July to 31st July 2014

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

LIBERONS NOUS DE TOUT ATTACHEMENT ET DE TOUTE PEINE DE CE MONDE MATERIEL

मोह और शोक से निवृति ।

ओ३म् यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्व विजानतः
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः ।।

यजु० ४०.७.११

Om ! Yasmin sarvāni bhootāni ātmayvābhooda vijānataha.
Tatra ko moha kaha shokaha ekatwa-manu-pashyataha.

Yajur Veda 40/7

Glossaire / Shabdārtha :

Yasmin - L'état où un sage, un érudit, de par sa capacité intellectuelle acquise par la compétence dans ces domaines suivants : le savoir, la science et la spiritualité, **Sarvāni Bhootāni** : toutes les créatures de ce monde, **Vijyānataha** : celui/celle muni/e d'une considération spéciale pour les autres, leur témoigne beaucoup d'égards et les considère comme soi-même, **Abhoot** - cela se passe ainsi, **Tatra** - dans cette situation, **Ekatvam** - Ayant l'esprit de l'unité avec tout le monde., Rester uni en oubliant toutes les différences ou les préjugés contre qui que ce soit, **Anu pashyataha** – avec la pratique conforme au yoga, les yogins / les sages atteignent la communion parfaite avec le Seigneur, **Kaha** – qui est dissipé ou chassé, **Moha** – attachement, entichement, engouement, lien de fidélité et de sympathie, la passion pour quelqu'un / quelqu'une, goût pour quelque chose, **Shoka** – peine, tristesse, malheur, détresse, souffrance, chagrin.

Interprétation / Anushilan

Comment peut-on libérer son âme de tout attachement et de toute peine de ce monde matériel? Y a-t-il vraiment un moyen?

Certainement, il y en a un, nous rassure le Veda.

Pour atteindre ce but il faut adopter ces attitudes positives et ces qualitées suivantes en soi :

(a) Que l'on agisse avec détachement. Que l'on considère le monde (l'humanité) comme une seule famille ("Vasudaiva Kutumbakam" en langue Sanskrite Vedique). Pour ce faire il faut avoir une culture d'ouverture et une approche amicale et sympathique envers tout le monde, que ce soit dans le bonheur ou dans le malheur. Que l'on ait la grandeur d'âme de ne considérer personne comme son ennemi.

(b) Que l'on pratique la méditation profonde (Jyān Yoga – en Hindi). C'est le moyen par lequel on arrive à se débarrasser de son égo, de ses arrière-pensées et de son comportement négatif.

A ce stade suprême du Yoga ('Samādhi' en Hindi - C'est le niveau de perfection dans la pratique du yoga et le but ultime que très peu de pratiquants arrivent à atteindre) on est en communion parfaite avec le Seigneur et on est agréablement surpris de découvrir soi-même, c'est-à-dire, son âme. On arrive à comprendre que l'on n'est pas le corps physique mortel, mais une âme immortelle.

C'est le moment d'extase du Yoga où, dans son esprit, on a que la vision de l'Etre Suprême Unique (Le Dieu) et de son omniprésence, c'est-à-dire, sa présence partout dans le monde, y compris dans toutes les créatures et aussi dans tout l'univers. D'une autre façon, on dirait que l'on voit toute la création en lui.

Conséquemment, avec cette vision de la lumière spirituelle du Seigneur dans son esprit, l'âme évolue et se détache de tout lien d'attachement et de peine de ce monde matériel.

Ainsi l'âme est libérée. Elle atteint la Félicité Eternelle ou "Moksha" en Hindi et rien au monde ne peut la retenir.

N. Ghoorah

Rishi Dayanand Institute

We are proud to inform that DAV Degree College Pailles is now known as Rishi Dayanand Institute.

Rishi Dyananad Institute is now ready to embark on a well-defined journey of providing quality tertiary education to all.

Our vision is to promote the education system that equips everyone especially those vulnerable with the knowledge, skills and values to be successful citizens in the 21st century.

We believe that a world leading education system is an important first step towards a productive and growing economy that delivers greater prosperity, security and opportunity for all.

We are now ready to offer new programmes in Management.

We have just signed and MoU with Open University Mauritius for 2 programmes namely :--

- **BSc (Hons) Business Management with Specialisation in Human Resources / Marketing / Tourism Management / Financial Services / Financial Risk Management / Investment / Taxation / Real Estate**
- **BSc (Hons) Business Entrepreneurship**

cont. on pg 2

सम्पादकीय

धन का प्रलोभन

आज हमारे देश के अधिक नागरिक धन लोलुपता वश पैसे कमाने के चक्कर में लगे हुए हैं। कड़ी मेहनत करके जीविका निमित्त वेतन पाने वाले पुरुषार्थी तो अपनी कमाई पर संतोष करके जीते हैं। शीघ्र ही धनवान बनने वाले लालची केसिनो, जुआघरों, घुड़दौड़ और खेल के मैदानों से नाता जोड़ लेते हैं। उनकी ज़िन्दगी हार-जीत की दौड़ में योंहि गुज़र जाती है और बेचैनी उनका पीछा नहीं छोड़ती है।

हार-जीत का एक मैदान शाँ-दे-मार्स है, जहाँ घोड़ों की दौड़ होती हैं। उस लूट के मैदान में हज़ारों नादान नागरिक रुपयों का दाँव घोड़ों पर लगाते हैं। धन के प्रलोभन से कितने लोग फ़क़ीर हो रहे हैं। टर्फक्लब के लुभावने विज्ञापनों से वे आकर्षित होकर अपनी मेहनत की कमाई बरबाद कर रहे हैं। उस हार-जीत की दौड़ में फँस कर अपने परिवारों को दुखित कर रहे हैं। यह देखा गया है, जो व्यक्ति एक बार घुड़दौड़ के झमेले में पड़ गया, वह कंगाल हो गया। उसकी उन्नति में बाधा पड़ गई। क्योंकि धन कमाने के पीछे जुआखोरी बनना बरबादी है।

मनोरंजन प्राप्त करने के साधनों में घुड़दौड़ भी एक साधन है, जहाँ धनवान तथा बड़े-बड़े व्यापारी मनोरंजन प्राप्त करने हेतु शांदे-मार्स जाते हैं। यह मैदान गरीबों के लिए भी एक मनोरंजक स्थान है, परन्तु घोड़े खरीदने, रुपये लुटाने और फ़क़ीर बनने की जगह नहीं ।

घुड़दौड़ में पैसा लगाना जुआ कहलाता है। जुआ खेलना निषद है, क्योंकि उससे अक्सर हानि होती है । शाँ-दे-मार्स के मैदान में घोड़े दौड़ाकर टर्फ़क्लब के मालिक अपनी तिजोरी गरम कर रहे हैं और नादान जुआरी अपनी भरी हुई तिजोरी खाली करने में लगे हैं। कहा जाता है कि लालच एक बुरी बला है। बड़ी आसानी से धन पाने के लिए घुड़दौड़ में दाँव लगाना मूर्खता है। जिसे घोड़े खरीदने की लत लग गई है, अगर वह शीघ्र ही इस बुरी आदत को छोड़ देगा तो उसका भला होगा ।

शाँ-दे-मार्स कंगाल बनाने का एक अखाड़ा है। ठगने का एक अड्डा है। घोड़े के पीछे असंख्य गरीब बेहाल होकर दुखित हैं, कई धनवान भी फकीर हो गए हैं। कितने नासमझ आत्महत्या कर बैठे हैं। यह देखा गया है कि कभी-कभी छलपूर्ण तरीक़ों से दौड़ में हेरा-फेरी होती रहती है, जिस कारण बहुत से खिलाड़ी धोखे के शिकार हो जाते हैं। इसीलिए सभी भाई-बहनों से निवेदन है कि आप घुड़दौड़ के ज़रिये धनी होने का सपना देखना छोड़ दें अन्यथा आपकी ज़िन्दगी में तरह-तरह की मुसिबतें डेरा डालती रहेंगी और आपका जीना हराम हो जाएगा ।

पाठको ! आप अपनी आर्थिक उन्नति पर सदा ध्यान दें, आप बड़ी ईमानदारी के साथ सही तरीक़े से धन कमाएँगे तो आपका भला होगा, आपका परिवार सुखी रहेगा, समाज और राष्ट्र का हित होगा। 'हार और जीत' जीवन के दो पहलू हैं, जैसे कभी दुख तो कभी सुख, परंतु मनुष्य को अपनी बुद्धि द्वारा ऐसा कर्तव्य निभाना चाहिए, जहाँ विजय प्राप्त हो। विजयी व्यक्ति का आदर-सम्मान सर्वत्र होता है पराजित आदमी का कोई मान-आदर नहीं होता है। वह अपने परिवार और सामाजिक संस्थाओं में निंदनीय होता है। इसीलिए साधु-संत तथा विद्वान् गण जनता को यही संदेश देते हैं कि ग़लत और सही का निर्णय करके कर्म करना चाहिए। अनुचित एवं उचित स्थान को अच्छी तरह परख कर वहाँ जाना चाहिए और बड़ी बुद्धिमता के साथ प्राप्त संपत्ति का सदुपयोग करना चाहिए, ताकि गृहलक्ष्मी सदा हमारे घरों में विराजमान हो ।

आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य-सदस्या का परम कर्तव्य है कि वह बड़ी मेहनत और ईमानदारी से धन कमाते रहे और बड़ी चतुराई से अपनी संपत्ति का सदुपयोग करें ।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मोरिशस

रविवार दि० ६.७.२०१४ को लगता था कि बारिश थमेगी नहीं लेकिन नेक काम में प्रकृति भी पूरा सहयोग देती है। वाक्वा आर्य समाज की ओर से जो जुलूस निकाला गया था पायोत स्थित बहुदेशीय कोम्प्लेक्स से वह सफलता पूर्वक वाक्वा नगर पालिका तक ठीक समय पर पहुँचा।

समारोह शुरु हुआ ठीक समय पर पंडित राजेन सिराज और चन्द बच्चों द्वारा **ओ३म् विश्वानी देव.....** मंत्र से, जिसका क्रियोली ज़ुबान में पंडित जी ने मंत्र का आशय समझाया ।

विषय रखा गया था, 'हिंसा-सामाजिक-बुराई है "social evil" है और सभी वक्ताओं ने उसी विषय पर अपने भाषण दिये, पंडिता चुड़ामणि ने तो उसके साथ जादू-टोना भी जोड़ दिया। इससे परिवार टूट रहा है। बच्चे छिन्न-भिन्न हो रहे हैं। देर होने से पहले कुछ तो करना चाहिए। आर्य सभा के प्रधान बालचन्द तानाकूर ने कहा कि रामचन्द्र जी के समय में बुराई का पुतला रावण थे तो द्वापर में कृष्ण के समय में कंस की बुराई सीमा तक पहुँच गई थी। आचार्य बितुला और नगर-पालिका के पौर माननीय श्री मेनोन येती ने भी उसी विषय पर लोगों को सम्बोधित किया।

कार्य सभी दृष्टि से सफल रहा । अन्त में सभी लोगों को जल-पान से सत्कार किया गया ।

श्रावणी उपाकर्म

Press Conference held on11.07.14 in the presence of Swami Ashutosh ji Parivrajak on the occasion of Shrawani Upakarma Mahotsav at the seat of Arya Sabha Mauritius

गत रविवार ता० १३ जुलाई २०१४ तदुनुसार श्रावण कृष्ण प्रतिपदा २०७१ विक्रम संवत् को आर्य सभा के मोहनलाल मोहित भवने में श्रावण पर्व का शुभारम्भ हुआ, जिसे हम श्रावणी उपाकर्म नाम देते हैं। आर्य सभा की ओर से हर साल उपाकर्म के मौके पर यज्ञ का उपाकर्म

करते हैं, उसमें पुरोहित मण्डल के अधिकाधिक पुरोहित-पुरोहिताओं की उपस्थिति होती है। साथ ही देश भर के आर्य समाजी अपने इलाके व शाखा-समाजों का प्रतिनिधित्व करते हुए यज्ञ में भाग लेते हैं ।

इस महान मौके पर भारत से आये हुए स्वामी आशुतोष जी ने एक सारगर्भित प्रवचन दिया। सभी श्रोताओं ने ध्यान देकर आरम्भ से अन्त तक स्वामी जी को सुना। स्वामी जी की भाषा सरस, सरल सुबोध है। गुढ़ विचारों को दिल की गहराई तक पठाने की क्षमता रखती है ।

उसी दिन शाम को डिस्पेन्सेरी रोड में स्थित महिला समाज ने स्वामी जी को आमंत्रित किया था। उनके साथ आर्य सभा मोरिशस के उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम और पाम्प्लेमुस ज़िला परिषद् के अध्यक्ष भाई गिरजानन्द तिलक ने सभा व परिषद् का प्रतिनिधित्व किया ।

स्वामी जी ने वेद मंत्र **त्र्यम्बकं यजामह.....** को लेकर विशद रूप से व्याख्या की। इतनी सरस सरल और व्याकरण सम्मत भाषा थी कि साधारण से साधारण श्रोताओं की समझ में आ गयी ।

सभा के उप-प्रधान ने अपने लघु भाषण ने कहा, 'त्रियोले एक ऐतिहासिक गाँव है। १०१ साल पहले इसी गाँव में पण्डाल बनाकर एक यज्ञ किया था जिसमें डा० चिरंजीव भारद्वाज उपस्थित थे, उन्हीं की उपस्थिति में त्रियोले में आर्य समाज की प्रथम शाखा स्थापित की गई । आज १०१ साल बाद महिला समाज की ओर से पण्डाल बनाकर यज्ञ हो रहा है जिसमें स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक उपस्थिति दे रहे हैं।

आज जो श्रावणी यज्ञ की शुरुआत हो रही है इसका श्री गणेश ४८ वर्ष पहले भारत ही से आये हुए संन्यासी अभेदानन्द ने त्रियोले तीन बुतिक आर्य समाज मंदिर किया था। और दो साल बाद आधी शताब्दी हो जाएगी जिसको धुमधाम के साथ मनायेंगे।

स्वास्थ्य की सही दिशा : प्राकृतिक चिकित्सा

क्या आपका पेट साफ़ है?
क्या आपको कड़कड़ाकर भूख लगती है?
क्या आपको गहरी नींद आ जाती है?
क्या आपको काम करने में उत्साह रहता है?
क्या आप दिन भर स्फूर्ति का अनुभव करते हैं?
क्या आप परिवारों के सदस्यों से मधुर व्यवहार करते हैं?
क्या आपकी आँखों और चेहरे पर तेज़ झलकता है?
क्या आपके सीने का घेरा, पेट के घेरे से अधिक है?
क्या आपको बीमार न पड़ने के नियमों का ज्ञान है?

यदि आपको जीभ के चटकारें जीवन से प्यारे नहीं हो
यदि आपको दवाएँ बहुत रुचिकर नहीं हो
यदि आपको अपने रोग का रोना रोने में आनन्द नहीं मिलता तो आप अपना आहार-व्यवहार अपना खान-पान सुधारें ।
यदि आप बड़ी आतुरता के साथ बुढ़ापे की राह नहीं देखना चाहते हैं।

तो

प्राकृतिक चिकित्सा की शरण में आइये ।

डॉ० विनय सितिजोरी
बी.ए.एम.एस.
बी.एन.वाई.एस

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Rishi Dayanand Institute

cont. from pg 1

Watch out for news concerning entry requirement and admission dates in Aryodaye and our website.

MQA (Mauritius Qualification Authority) Certification

Arya Sabha Mauritius is now MQA Certified

We offer award and non award programmes and seminars to all members of Arya Sabha and the public at large.

We equally offer in house programmes to all organisations on specific and requested subject area.

These programmes and seminars are HRDC refundable.

Assistance and support on the HRDC training grant system to employers wishing to get refund from HRDC on training of their staff is also available upon request.

For more information please contact Mrs. Roshni Narrain Academic Manager on 2122730 or r.narrain@aryamu.intnet.mu

साऊदी अरबिया में वेद

नारायणपत दसोई

वेद मौखिक रूप में यूरप पहुँचा था। वहाँ उसका स्वागत बड़े उत्साह से किया गया था। ऐसे में यूरप के विद्वानों को उसने इतना मन्त्र मुग्ध किया था कि वहाँ वेद पर बेशुमार साहित्य रचा गया था।

यूरप में जिन विद्वानों ने वेद के वशीभूत होकर उसकी प्रशंसा की थी, उनमें माक्स मूलर, माटरलिंक, रेनु, व्हीलमेन आदि थे। माक्स मूलर वेद से इतने मन्त्र मुग्ध हुए थे कि उन्होंने कहा कि भारत ज्ञान का स्रोत है। वेद के संबंध में माटरलिंक का वही विचार था, जो माक्स मूलर का था। अतः उन्होंने लिखा कि शायद ही कोई इस बात का विरोध करेगा कि वेद के कारण भारत ज्ञान का स्रोत है। इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा था कि वेद-ज्ञान सम्पूर्ण विश्व में फैल गया था। ऐसे में उन्होंने उन देशों का नाम भी लिया था, जहाँ-जहाँ वेद पहुँचा था। वे मिस्र, ईरान, चीन, अमेरिका आदि थे ।

माटरलिंक कौन थे ? वह रवीन्द्रनाथ ठाकुर के समकालीन थे । रवीन्द्रनाथ ठाकुर की नॉबेल पुरस्कार से पुरस्कृत गीताँजलि का भी विश्व में गहरा प्रभाव था। सन् १९१३ में गीताँजलि को नॉबल पुरस्कार से पुरस्कृत होने के तुरन्त बाद फ्रेंच भाषा में उसका अनुवाद हुआ था। जिन्होंने इस कृति का फ्रेंच में अनुवाद किया था, वह आद्रे ज़िद थे, जो भारत में एक अपरिचित विद्वान्-कवि नहीं थे। उनका जन्म उन्नीसवीं शताब्दी में उसी वर्ष में हुआ था, जिस वर्ष में महात्मा गांधी का जन्म हुआ था अर्थात् १८६९ में ।

उस समय जब १९१४ में प्रथम विश्व-युद्ध छिड़नेवाला था, तभी फ्रांस के तत्कालीन राष्ट्राध्यक्ष क्लेमाँसो के पास गीताँजलि थी। और, सम्भावित विश्व युद्ध से वह चिन्तित भी थे। यही कारण था कि उन्होंने फ्राँस राजकुमारी से कहा था कि नुआइ था, चलिए गीताँजलि पढ़कर अपनी चिन्ता को दूर करें। उल्लेखनीय है कि वह फ्रांसीसी राजकुमारी भी सरोजिनी नायडू की ही भाँति एक कवयित्री थी।

यहाँ, रेखांकित करने वाली बात यह भी थी कि जब आँद्रे ज़िद ने गीताँजलि का फ्रेंच भाषा में अनुवाद किया था, तब उनको नॉबल पुरस्कार नहीं मिला था। पर अगर उस वक्त कोई यह कहता कि वह भविष्य में यहाँ चर्चित पुरस्कार पाकर ही दम लेंगे तो यह आश्चर्य की बात न थी, क्योंकि सन् १९४७ में ७८ वर्ष की अवस्था में उन्होंने यह पुरस्कार जीत ही लिया था।

गीताँजलि के अनुवाद के उनके इस कृत्य से यह संदेश मिल जाता था कि वह भी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की ही तरह साहित्य संसार में कोई बड़ा कार्य अवश्य करेंगे। जब उनको १९४७ में नॉबल पुरस्कार प्राप्त हुआ था तो जो अनुमान पहले उनके बारे में किया गया था, वह सच साबित हुआ। यहाँ यह बताना उचित होगा और इससे वेद प्रेमियों को जानकर खुशी होगी कि वेद साऊदी अबिया में भी पहुँचा।

हज़रत मोहम्मद के जन्म से पहले दो हज़ार वर्ष पूर्व वहाँ एक अरब कवि थे, जिन्होंने वेद पढ़ा था। इस कारण भारत के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए एक कविता लिखी थी, जिसमें उन्होंने कहा था कि तुम भारत मेरे लिए कितने आदरणीय हो, कारण कि परम पिता परमात्मा ने तुम्हारी धरती पर अपना दिव्य ज्ञान प्रदान किया है।

उस कवि का नाम लावी था। वह हज़रत मोहम्मद के जन्म से दो हज़ार चार सौ वर्ष पूर्व अरबिया की धरती पर जन्मे थे।

वेद के विषय में उन्होंने यह भी कहा था कि इस ईश्वरीय ग्रन्थर (वेद) में कैसा पावन-पवित्र प्रकाश है, जिससे हमारी आँखें चौंधिया जाती हैं। परमात्मा ने यह प्रकाश, जो उषा काल की भाँति उज्ज्वल है, हमारे लिए भेजा है। आगे भी उन्होंने कहा था कि परमात्मा ने धरती पर सभी लोगों को धर्म पूर्वक अपना जीवन बिताने के लिए अपनी अमूल्य शिक्षा प्रदान की है - जो वेद हैं

अतः जो ज्ञान भगवान ने सारी मानवता के हित के लिए वेदों में भेजा है, उसे ग्रहण करो, क्योंकि निश्चित रूप से वह ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है।

OM
The President & Members
Mauritius Arya Yuvak Sangh
under the aegis of
ARYA SABHA MAURITIUS
cordially invite you to attend the celebration of the
22nd Arya Yuvak Day & 67th Independence Anniversary of India
Commemorating the 140th Anniversary of the Satyarth Prakash

Venue : Rabindranath Tagore Institute, Ilot.
Date : Friday 15th August 2014
Time : 2.00 p.m. - 4.00 p.m.

Special Guest : Swami Ashutosh ji Parivrajak

Several distinguished guests will grace the function by their presence.
You are kindly invited to participate in the rally "Yuvak Jagaran Yatra" starting 1.00 p.m, from Arya Sabha Mauritius, Port Louis.

Mrs P.S. Teeluckdharry *President* — **D. Gangoo** *Secretary*

श्रद्धेया माधुरी देवी प्रीतम की श्रद्धांजलि स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित है

पंडिता प्रेमिला सिरतन

ओ३म् । प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्रद्धे दिदासतः ।
प्रियं भोजेषु यण्वस्विदं म उदितं कृधि ।।

ऋग् मंड १० सू २५१ मं० १०

भावार्थः – यजमान श्रद्धा से यज्ञ करते हुए प्रभु से प्रार्थना कर रहे हैं। हे श्रद्धे ! यज्ञ में दान करने वालों का तुम सदा प्रिय भावना से इच्छापूर्ति कर भला करना। दाता की सर्व कामनाओं की पूर्ति करके उसके सहायक बनना है। जो यज्ञीय भावना से कर्म करते हुए भोग कर रहे हैं उनकी भी भलाई हो। ऐसी मेरी प्रार्थना है। इस प्रार्थना से भरी वाणी को पूर्ण करो।

यजमान की श्रद्धा से सभी के लिए कल्याणार्थ कर्म होते हैं। वह श्रद्धा-भक्ति से सब कुछ प्राप्त करता हुआ स्वयं को समर्पण कर डालता है। विश्वास का दीप जलाकर, श्रद्धा का फूल खिलाकर, धर्म का मार्ग सजोकर, कर्म की सुगंध फैलाकर, चित में चरित्र का भाव जगाकर, मन में उसकी मनन की स्मृति महसूस कराकर न जाने वह कहाँ चली गई है। वह है 'माधुरी देवी' जैसे –

धन की देवी है नारी विद्या की देवी नारी है धरती माता भी
ज्ञान की देवी है नारी गायत्री है नारी, पावन नदियाँ है ।
हमारी शक्ति की देवी है नारी नारी झांसी की रानी,
नारी मीरा दीवानी संतोष की देवी है,
नारी वेद माता है वरदानी, करुण प्रेम की दानी
वेद का सर्वोच्च मंत्र सविता है नारी, आँखों में
पल पल पति, वह माता है भवानी

जो सभी को सजाती, सँवारती, सँभालती और सुरक्षित रखती है जो अपना सर्वस्व अर्पणकर सदा के लिए चली जाती है। वैसे ही माता पिता ने परमात्मा-न्याय द्वारा पुत्र-धन के रूप में 'माधुरी देवी' को प्राप्त किया । जन्म लेकर साकार माता-पिता के हस्थों में पली अति लाडली सबके स्नेही, सत्यदेव प्रीतम जी की धर्म पत्नी थी। जो वर्षों तक Ministry of Education & H.R. में अथक सेवाएँ दीं। श्रीमती जी एक बच्ची की माँ थी। उन्होंने अपने परिवार की ऐसी सेवा कि जिनको भूलना परिवार को, हरेक पल के लिए असम्भव हो गया है। आप बहुत नम्रचित, सच्चे दिलवाली, आज्ञाकारिणी, ममता से भरी महिला थी जो सभी का स्वागत अपनी मीठी मुस्कान से हमेशा करती थी। प्रेमपूर्ण-गृहस्थ जीवन बिताती थी। अचानक अस्वस्थता के कारण २५ अप्रैल २०१२ को शरीर रूपी चोला साथ नहीं दे पाया ।

भोर की बेला थी। पक्षी परवाज़ करते हुए अपने घोंसले से निकल रहे थे तो उस समय में उसकी हंस रूपी आत्मा परमधाम जाने की, रथ सजाकर उड़ान भर रही थी। आकाश में लाली छा गई। चारों ओर सन्नाटा छा गया। उसके प्राण बचाने में सभी लोग बेबस थे। 'विक्टोरिया अस्पताल' में प्रवेश होते ही अपना पुराना वस्त्र रूपी शरीर छोड़कर परमात्मा की गोद में समा गई। प्रभु की प्यारी, स्नेह आत्मा को पूरा आर्य परिवार स्नेह भरी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए २७ अप्रैल को 'सेंपोल के बालगोबिन आश्रम' में पधारे हुए थे। वहाँ पंडिता गोकुल द्वारा यज्ञ की तैयारी हुई । यज्ञ, वेदपाठ, श्रद्धांजलि विशेष मंत्र, प्रवचन, भजन किये गये और श्रीमान सत्यदेव-प्रीतम द्वारा श्रद्धा की आह भरी अनमोल वचन से सर्व गृहस्थों को प्रेम, प्यार, स्नेह से स्वजीवन व्यतीत करने का आशीर्वाद मिला जैसे –

धन घमण्ड नभ मन मोरा । प्रिया हीन तड़पत मन तोरा अर्थात् प्रिया पत्नी की रिक्त जगह माँ, बहन, बेटी. बहु कोई उस खालीपन की पूर्ति नहीं कर सकती है सभी पुरुषार्थ करने की हिम्मत, उत्साह धैर्य धारण करवाते हैं पर जब-तब हम अपने मन से मननकर करेंगे उस घटना को नहीं भूलेंगे। उसकी याद सताती ही रहती है। बीती घटना जीवन को समुज्ज्वल ही बना सकती है या अंधकार में भटका सकती है। जैसे पाप-पुण्य हमारा पीछा नहीं छोड़ता । बछड़ा अपनी माता को ढूँढ़कर दूध पीता और उसी के पास सोता है। ठीक उसी प्रकार पूर्व जन्म के पाप-पुण्य कर्ता को ढूँढ़ लेता है। ठोकर लगने पर चौराहे पर हम नया रास्ता निकाल ही लेते हैं। इस प्रकार समाज को जगाने के लिए ऐसी श्रेष्ठमत से सबको संतोष मिला कि यज्ञीय भाव से कर्म करते हुए हम सब कुछ भोग कर रहे हैं। कोई मन से दुखी, तो कोई तन से, कोई धन से कोई जन से दुखी है। इसलिए इस धरती को मृत्यु लोक कहते हैं जिसपर अपना कर्म फल भोगने के लिए मुट्ठी बाँधे आते हैं हाथ पसार कर चले जाते ।

बाल्गोबिन आश्रम के (मानेजर) संचालक 'सूर्यप्रकाश तोरल' जिसने श्रीमती माधुरी देवी प्रीतम जी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि उसकी उपस्थिति से आतंरिक सुख महसूस होता था। आप सदा सेवा संघ आश्रित जनों को भोजन का प्रबन्ध करती थी। श्रद्धेया माधुरी देवी जी में आध्यात्मिक बल, अनिवार्य रूप से ओत-प्रोत था। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आध्यात्म-ज्ञान से सुसज्जित रहने का सदा प्रयत्न करती रहती थी। पति की अनुपस्थिति में भी अकेले बैठकर घी-सामग्री आहुत कर, मंत्र उच्चारण कर यज्ञ कर लेती थी जिससे गहन शांति का अनुभव करती थी। अपनी आत्म-चेतना जागृत कर सभी से बंधुत्व की भावना जगाई थी। सन् २०१३ के २५ तारीख अप्रैल को अपने पार्थिव शरीर छोड़ा जिससे जीवन भर स्वाहा कर समर्पित होकर आश्रितजनों के साथ एक अच्छे संबन्ध का निर्माण किया । व्यवहारिक आचरण में शुद्धता प्रतिबिंबित कर प्रभु का प्यारा जग से न्यारा हो गई ।

यज्वस्विदं म उदितं कृधि अर्थात् मेरी प्रार्थना से भरीः वाणी पूर्ण करो

मधुर या नम्र वाणी से घाव भर जाता है दुख बाँटने से दुख घटता है और सुख बाँटने से सुख बढ़ता है। इसलिए 'बाल्गोबिन आश्रम' में माधुरी देवी की आत्मा की सद्गति, सुगति और परमगति के लिए प्रार्थनाएँ हुई। *शेष भाग पृष्ठ ४ पर*

डा० हंसा गणेशी न रही

डा० हंसा गणेशी जी का गत गुरुवार ता० ९ जुलाई को ८० वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। वह कुछ ही दिनों से अस्वस्थ रहने लगी थी। जब स्वास्थ्य अधिक बिगड़ने लगा तो उन्हें प्रायवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया। सेवा सुश्रुषा के बावजूद भी सेहत गिरती ही गई। अन्त में बोली भी बन्द हो गई। अब संकेत द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करवाने लगी। आखिर में पंछी पिंजड़ा छोड़कर उड़ ही गयी। इस दुनिया में कोई रहने के लिए नहीं आता। इस जगत को छोड़कर जाना ही पड़ता है। इसका नाम ही ऐसा है, जिसका आशय है छोड़कर जाना, जो जाता रहता है। हम मानव इस जगत का अभिन्न अंग है। हम कैसे रहेंगे?

डा० हंसा जी डा० महेश्वर गणेशी से शादी करके मोरिशस आयी थी। वह पहली 'स्त्रीरोग विशेषज्ञ' (Gynaecologist) थी। अपने लम्बे सेवा काल में कितने बच्चों को जन्म दिलाने में पूर्ण सेवा दी पर उनकी खुद कोई सन्तान न हुई। भगवान की लीला अपरम पार है, किसी के समझ में नहीं आता।

डा० हंसा गणेशी जी ने तन, मन से अपनी सेवा प्रदान की। खूब परिश्रम से धन कमाया और हाथ खोलकर नेक कामों को पूरा करने के लिए विविध धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं को दान किया। आर्य सभा के अच्छे कार्यों को देखते हुए सबसे अधिक दान दिया।

मोरिशस में छोटी गुजराती कोम्यूनीटि के कुछ सदस्यों के अलावा आर्य समाज से उनका अधिक सम्पर्क रहा। इसको देखने का मौका तब मिला जब पाल्मा स्थित श्मशान भूमि में चीता में अग्नि आधान करने का वक्त आया तो हम आर्य सभा के सदस्य पास-पड़ोस के आर्य समाजी और हमारे पुरोहित-पुरोहिताओं के सिवा अनेक महानुभाव पधारे हुए थे।

हमारे पुरोहित – राजेन्द्र सिराज, और राजेन तानाकूर तथा हमारी पुरोहिताएँ – प्रियम्वदा नोसिब और राजवंश सोलिक ने विधि पूर्वक वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ उनकी अन्त्येष्टिक्रिया की। अन्त्येष्टिक्रिया सम्पन्न करने में आर्य सभा ने अपना कर्त्तव्य निभाया।

शरीर में आने जाने वाली आत्मा तो अमर है। वह तब तक आती-जाती, जब तक मुक्ति नहीं मिलती। परमात्मा से प्रार्थना है उसकी आत्मा को सद्गति प्राप्त हो।

श्रद्धांजलि यज्ञ

गत रविवार दिनांक २० जुलाई को दोपहर तीन बजे स्वर्गीया डा० हंसा गणेशी जी की स्मृति में आर्य सभा द्वारा एक श्रद्धांजलि यज्ञ उनके गृह पर किया गया। जिसमें भाग लेने के लिए आर्य सभा के मान्य प्रधान डा० रुद्रसेन नीऊर जी, प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी, उप-प्रधाना श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण जी, प्लेन विलयेम्स आर्य ज़िला परिषद् के अध्यक्ष श्री रवीन्द्रसिंह गौड जी, विधान सभा के Deputy Speaker माननीय प्रदीप पीताम्बर जी, श्रीमान् शिव वागेला जी तथा देसाई, हासामाल और शाह परिवार के लगभग ४० सदस्य उपस्थित थे।

यज्ञ के पश्चात् आर्य सभा के मान्य प्रधान, प्रधान और उप-प्रधाना ने अपने संदेश में डा० हंसा गणेशी जी की स्वास्थ्य सेवा और उनकी दानवीरता की प्रशंसा की। अन्त में सभी पधारे हुए महानुभावों को मिठाइयों और पेय पदार्थों से सत्कार किया गया था। उनके प्रति श्रद्धान्जलि प्रकट की गई।

OM

PLAINES WILHEMS ARYA ZILA PARISHAD

Schedule for Shravani Yajna 2014

S/N	Venue	Day/Date	Time	Purohits
1.	St. Paul As	Thurs 17.07	7.00 p.m.	Pta. Nosib & Pt. K.Khedoo
2.	La Louise AS	Fri 18.07	3.30 p.m.	Pt. J. Mahadeo
		Sat. 19.07	3.30 p.m.	Pt. Y. Chooromonay
		Sun 20.07	8.30 a.m.	Pta Seerathun
3.	Moka Road St. Louis	Fri 25.07	3.30 p.m.	Pta P. Seerathun
4.	Belle Rose As	Sat. 26.07	3.30 p.m.	Pta.J. Mahadeo
		Sun 27.07	8.30 a.m.	Pta. S. Pelladoa , Pta. P. Dookhee
5.	Glen Park AS	Fri 25.07	5.00 p.m.	Pt. R. Seeraj
6.	Chateau Neuf AS	Fri 25.07.	6.00 p.m.	Pt. J. Mahadeo
7.	Allee Brillant As/AMS	Sat.26.07	3.00 p.m.	Pta Saulick,
		Sun. 27.07	10.00 a.m.	Pt. Seegolam,
8.	Hermitage AS/AMS	Sat. 26.07	4.00 p.m.	Pt. L. Beekharry,
		Sun 27.07	8.30 a.m.	Pta. N. Bahorun, Pt. Sathyam
9.	Camp Fouquereaux Arya Samaj	Tues 29.07	7.00 p.m.	Pt. Khedoo
10.	Trefles AS/AMS	Sat 02.08	4.00 p.m.	Pt. J. Mahadeo, Pt. B. Chunnoo,
11.	Sun 03.08	8.30 a.m.	Pta, S. Pelladoa, Pta. Loky, Pta Saulick, Pta V. Hemraz	
12.	Beau Bassin AS	Fri 01.08.	3.30 p.m.	
		Sat. 02.08 --	4.00 p.m.	
		Sun 03.08 --	8.00 a.m.	
13.	Solferino AS	Sun. 10.08	8.30 a.m.	Pt C. Custnea, Pt. K. Khedoo
14.	Derby Forest Side As	Sun 17.08	8.30 a.m.	Pta. A. Hinchoo
15.	Olier AS	Sun 20.08	8.30 a.m.	Pt. J. Mahadeo, Pt. Seewoogoolam, Pt. Y. Chooromonay,
16.	Derby Forest Side AMS	Sun 13.07 to 09.08	- Parivarik Yajna -	Pta. Saulick

R. Gowd President P.W.A.Z.P

सावन के घटा

गरमी से जब मन घबड़ाला
तबे छा जाला सावन के घटा ।
रिमिझिमी, रिमिझिमी बनके फुहारा
मन के तऽ अइसे गुदरावे
पियवा के सनेसा मन में लहरावे
तबे छा जाला सावन के घटा ।
जब जब उनकर याद सतावे
तड़प जाता हिया जब हमार
दूर देश से लेके मेघा
आवेला सुखद सनेस
तबे छा जाला सावन के सनेस
पिउ, पिउ पपीहा के बोलिया
जिया में उबवेला हुलास
दउरी दउरी गइवीं जब अपने दुअरिआ
खाड़-आइल पिया दूर देश से
तबे छा जाला सावन के घटा ।

राजेश सिन्हा
बक्सर - बिहार

SHRĀVANI MAHOTSAV 2014

Arya Sabhā Mauritius as the apex organisation of Arya Samājs in the island has been celebrating the Shrāvani Mahotsav during the month of Shrāvan for decades. This is a period where we emphasise on the dissemination of the knowledge encapsulated in the Vedic hymns (Veda mantras.)

The *Arya Parva Paddhati* depicts a simplified model whereby we symbolically recite the first and last mantras of the four Vedas. A plunge into the meanings of these mantras is worth the experience as it would inspire us to apply the Vedic knowledge in our day-to-day life and become real Aryas (people with noble character, deeds and nature as well as harmonious thoughts, speech and actions.)

The Vedas are the one and only true revelation (*shruti*) bestowed upon four sages/seers with the highest level of spirituality (*rishis*) at the creation of mankind in the universe. The Vedic hymns constitute in themselves an inexhaustible source as well as a fountainhead of knowledge as regards to both mundane and spiritual matters. In fact they are the source of all true knowledge and all knowledge that flows thereof.

During the month of Shrāvan we hold special yajnas / havans during which we read the Veda mantras. These programmes should also be occasions to elaborate on the meaning of the mantras in a simplified way to reach the masses, specially children and youth – the to-be-fathers and mothers of generations to come.

We give below some extracts of Veda mantras as guidelines:

***Stomairvidhemāgnaye (AV 20.1.3*)**

Let us recite the Veda mantras in praise and worship of GOD (prabhu bhakti).

Note: In the explanations of the third mantra of Ishwara Stuti Prārthanā Upāsnā in the Sanskāra Vidhi, Maharishi Dayānand Saraswatee refers to *"prabhu bhakti"* as a state where we are eager and ever ready to follow the instructions of GOD [*"usi ki ājyan pālana karne mein tatpar rahein."*]

Yastanna Veda kimrichā karishyati (RV 1.164.39)

He who does not know God does not get the full benefits from reciting Veda mantras.

Note: A proper understanding of the mantras empowers us with true knowledge on the character (*guna*), deeds (*karma*) and inherent attributes (*svabhāva*) of GOD. We would thus be able to mould ourselves accordingly.

Sanshrutena gamemahi mā shrutena vi rādhipi (AV 1.1.4)

We pledge that our thoughts, speech and deeds be as per the teachings of the Vedas, not the opposite.

Note : Thought, speech and deed constitute the fundamentals of our interaction first and foremost vis-à-vis ourselves as well as towards others. We need to walk the talk, i.e. be harmonious at the mental, vocal and corporal levels.

Stomedindrasya sharmāni (AV 20.68.6)

Let us praise and worship God to attain bliss (unadulterated happiness, i.e. without a single trace of sorrow.)

Note: Living life as per the Vedic teachings would elevate our spiritual levels and henceforth rebirths would be only to fine tune our progress and ultimately realise the main aim of the human form of life - *moksha* (salvation.)

Shrāvani mahotsav come and goes. It reminds us that our success in climbing the spiritual ladder depends solely on the effort we put in elevating our levels of spirituality [spiritual + reality]. Each of our endeavours should bring us nearer to the objective: *moksha*. We shall overcome death only by not being born again. NO birth = NO death; that is only possible through moksha (liberation from the cycle of birth and death.)

A train attains its destination when it keeps to the appropriate rail tracks. May we all seize of this opportunity to clarify our concepts and come back on the Vedic tracks of life.

BramhaDeva Mukundlall
Darshan Yog MahāVidyālaya
Rojad, Gujarat, India

श्रद्धेया माधुरी देवी प्रीतम की श्रद्धांजलि स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित है

पंडिता प्रेमिला सिरतन

पृष्ठ ३ का शेष भाग

सभी हित-मित्र, सगे-सम्बन्धी और आश्रितगणों ने एक अंजलि आहुति उसकी स्मृति में आहुत कर श्रद्धा के सुमन अर्पण किए वह सदा मुस्कराती हुई अपने मुखमंडल से प्रगाढ़ आभा बिखराती थी। अपने घर को हमेशा नए मूल्यों, नए ज्ञान नए नेतृत्व से सजाती रही जिससे पति-पत्नी में न कभी अनबन, न लड़ाई-झगड़ा होता। इसलिए उसके गृहस्थ धर्म का उत्थान वानप्रस्थ आश्रम तक किया। गृहस्थ की बागडोर अपने हाथों में लेकर एक अच्छे परिवार का सूत्रपात किया। सभी क्षेत्र में अपने प्रभाव से अमूल-चूल परिवर्तन लायी। मूल्यों की डोर थामकर खुद को बचाया जिससे एक घर-परिवार और समाज-राष्ट्र भी बच सका और उसका नवनिर्माण हुआ। हमें उसी की याद आती जिसे हम खो देते हैं । जब तक वह हमारे पास होता, हम उसका मूल्य नहीं पहचानते जिस दिन हम उन्हें खो देते हैं उस रिक्त को इतना महसूस करते जैसे एक दाँत टूटने पर जीभ बार-बार उस खाई को कूरेदती रहती है। जैसे –

तेरी याद आई, तेरे चले जाने के बाद।
तेरे बिन सुने नयन हमारे,
तेरे बिन अधूरे जीवन हमारे।
पल-पल मेरा बहुत कठिन है,
दूर है मंज़िल राह गहन है।
सदा देखूँ मैं तेरे मीठे सपने ।

नारी सदा नर्क द्वार बंद कर, स्वर्ग का द्वार खोलकर, सदा के लिए स्मरण कराती है कि मैं मातृ शक्ति हूँ। मेरा हर्षित मुख का चेहरा ही पवित्र-जीवन का दर्पण है। नारी उत्पीड़ना और त्रासद से काँटों का झाड़ उखाड़ कर स्वस्थ परिवर्तन लाती है। और सदा विघ्न हरण कर तूफ़ान न मचाकर करुण पुकार से सिंहासन हिला डालती है आज भी सीता को अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है। पर वह सदा सफल उतरती है।

D.A.V College (Port Louis) - News Update

Educational Tour 30th May 2014

The Arts Department of DAV College organised an Educational Tour for the Arts Teachers and Students of Form V, Lower and Upper VI. The department visited an exhibition at the Mauritius Examinations Syndicate (MES) and then preceded their tour to the Vallée des Couleurs at Chamouny to visit the coloured earth.

Mural Painting and Tree Planting at the Enterprise Mauritius Ltd 3rd, 4th and 5th June 2014

The DAV College was invited to attend a Mural Painting and Tree Planting activity sponsored by the Enterprise Mauritius Ltd at Vallée des Prêtres. These two activities were organised to celebrate the World Environment Day. Members of the DAV Environment Club and Arts Department were the key participants of these two activities. The Mural Painting took place on the 3rd and 4th June and the Tree Planting activity on 5th June.

Mural Painting at DAV College 13th June 2014

A Mural Painting was organised by the Arts Department of

the college under the supervision of Mrs. M. N. Etwaroo and Mr. R. Jankee, both teachers of DAV College. The students of Lower VI participated in this exercise. The Ministry of Gender Equality, Child Development and Family Welfare sponsored this activity.

World English Day 13th June

The English Department of the college organised a series of activities to celebrate the World English Day. The activities took place in the Hall of Arya Sabha Mauritius. Students of different classes presented a series of shows such as sketch, Elocution, Poetry & Spelling Bee, Tongue Twisters, Quiz and a couple of English songs sang by the students of forms 3 and 4. The Arts Department took care of the background set up of the stage.

Prize Giving Day 20th June 2014

The college organised a Prize Giving Day with the active participation of all students and teachers. The students of different classes presented a series of shows and prizes were awarded to students who performed excellently in the third term Exams held last year in October 2013. The president of the Arya Sabha Mauritius Mr Balchand Tanacoor was invited as special guest. In his speech he thanked the Rector, the staff and the students for the good work done throughout the year with the support of the parents and the Arya Sabha Mauritius.

He also expressed his appreciation for the activities organised in connection with the Prize Giving Day with the active participation of the students and the staff.

He further congratulated all the successful students and the prize-winners and exhorted those students whose performance was poor to work harder so that they might catch up and succeed in their examination this year. In the end he encouraged everybody to work still harder and raise the level of performance of the school. Being in real earnest he wished that in the coming year there might be laureates at the HSC Exams among the Form VI students of this school as DAV College of Morcellement has set the ball rolling.

Completion of the Tyre Project 24th June 2014

The college successfully completed the tyre project competition which was organised by the United Nations Development Programme (UNDP). The competition started in October 2013 and went on for almost six months. The Environment Club and the Arts Department were the key participants.

World Art Day 25th June 2014

The Arts Department took part in a workshop which was organised by the AAC (Action for Artistic Creativity) on the occasion of World Art Day. The workshop was held in the hall of Arya Sabha Mauritius in collaboration with the City College and Islamic College under the Supervision and Guidance of Mr Dev Chooramun, President AAC/ACA and Regional Coordinator for Africa IAA/AIAP (UNESCO). Six local renowned artists conducted the workshop in which there were an exhibition of the artists' artworks, books, catalogues, discussions, demonstration and talks on the art theory.